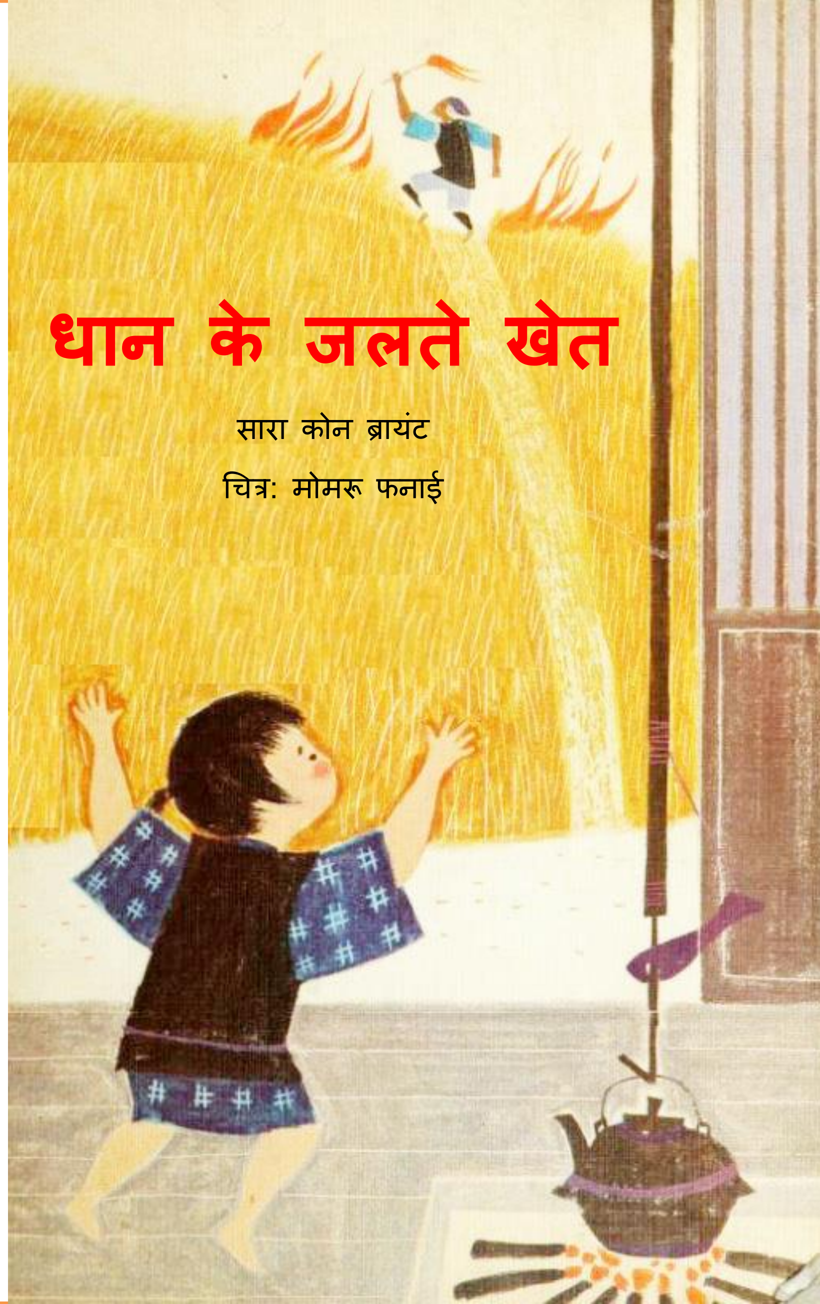


धान के जलते खेत

सारा कोन ब्रायंट

चित्र: मोमरू फनाई

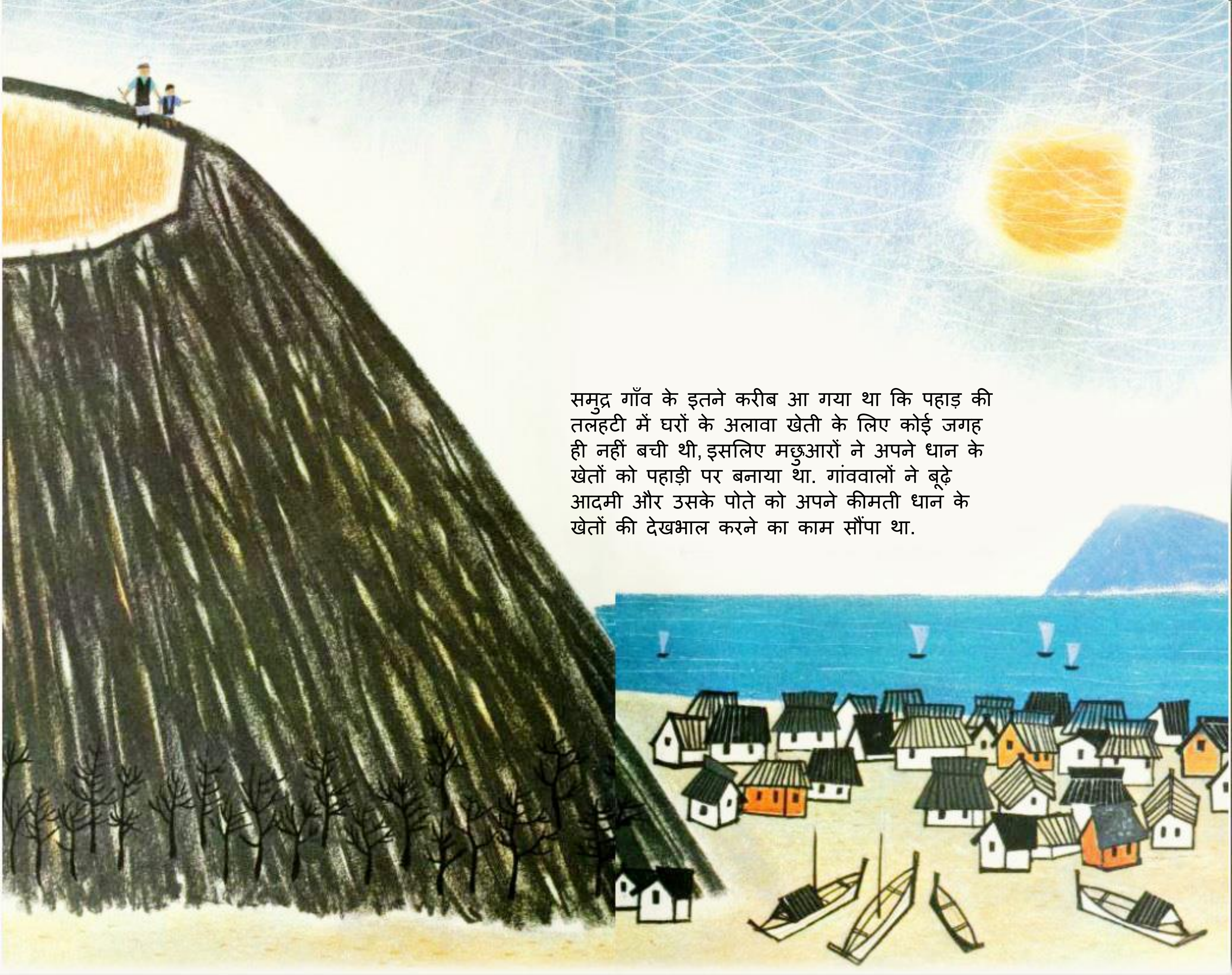
धान के जलते खेत

सारा कोन ब्रायंट

चित्र: मोमरू फनाई



जापान में बहुत समय पहले की बात है. एक बूढ़ा मज़दूर अपने पोते के साथ धान के खेतों की देखभाल करता था. धान के खेत एक पहाड़ पर स्थित थे जहाँ पर ज़मीन समतल और उपजाऊ थी. धान के खेत उन मछुआरों के थे जो पहाड़ की तलहटी में, समुद्र के किनारे एक गाँव में रहते थे.



समुद्र गाँव के इतने करीब आ गया था कि पहाड़ की तलहटी में घरों के अलावा खेती के लिए कोई जगह ही नहीं बची थी, इसलिए मछुआरों ने अपने धान के खेतों को पहाड़ी पर बनाया था. गांववालों ने बूढ़े आदमी और उसके पोते को अपने कीमती धान के खेतों की देखभाल करने का काम सौंपा था.

एक दिन जब बूढ़े ने समुद्र की ओर देखा, तो उसे कुछ ऐसा दिखाई दिया जिस देख वो इतना डर गया कि वो रो पड़ा. उसने अपनी आँखें मलीं और फिर से देखा. फिर उसने अपने पोते से चिल्लाकर कहा. "भागो! घर की ओर दौड़ो और मेरे लिए एक जलती हुई लकड़ी लेकर आओ!"





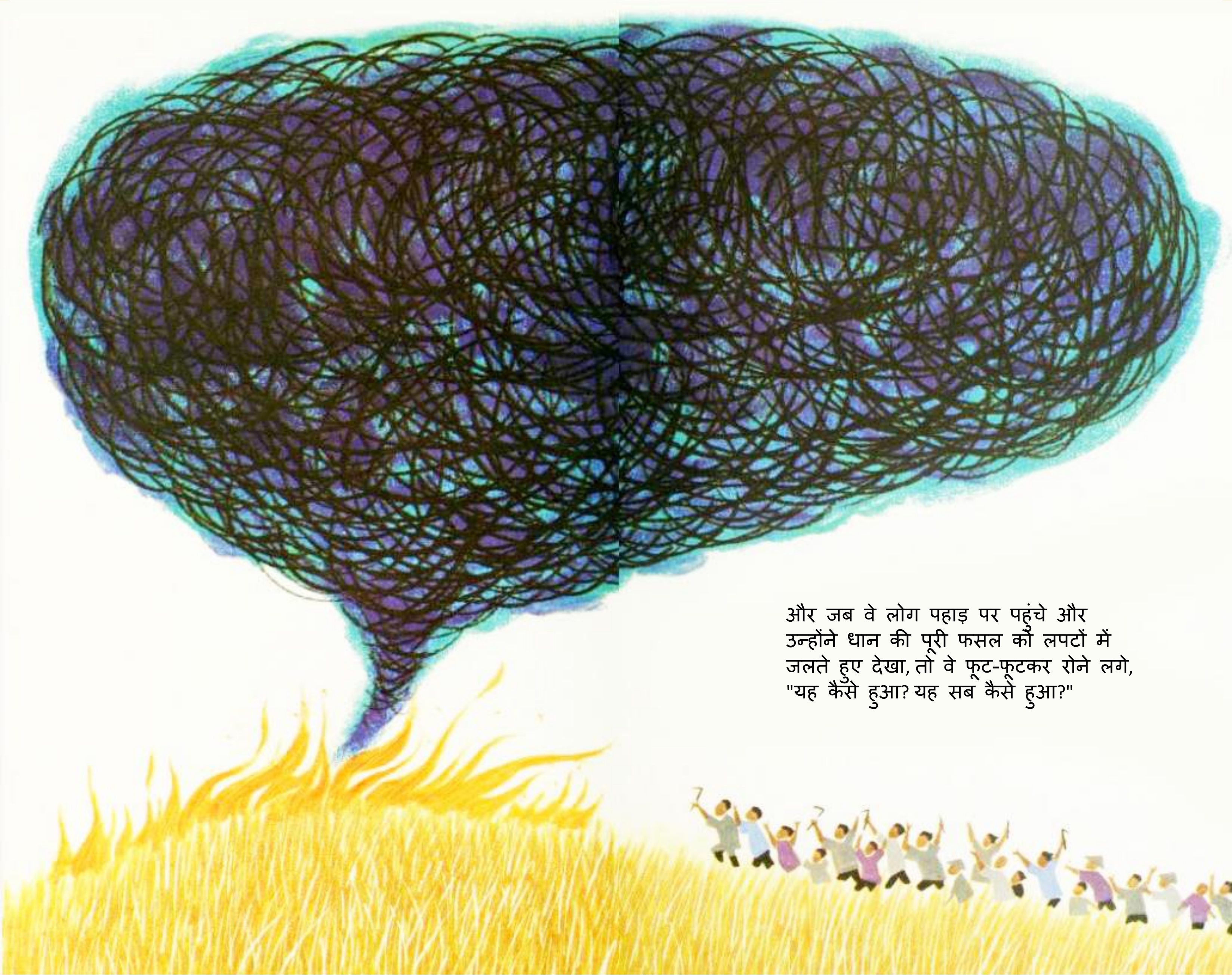
लड़के ने पहले कभी भी अपने दादाजी को इतनी तेज आवाज में बोलते हुए नहीं सुना था, इसलिए वो भी बहुत डरा गया था. पर जैसे ही उसे आज्ञा मिली वो घर की ओर दौड़ा, और उसने चूल्हे में से एक जलती हुई लकड़ी निकाली. जब वो वापस लौटा, तो बूढ़े ने जलती लकड़ी को हाथ में पकड़ा और वो पके, सूखे धान के पौधों में आग लगाता हुआ खेतों के बीच में से भागा.

कुछ ही मिनटों में धान के खेत धू-धू करके जलने लगे. आग की कड़कड़ाती लपटों से सूखे धान के पौधे जलकर ख़ाक हो गए, और पहाड़ से भयंकर काला धुआँ ऊपर उठने लगा.

"दादाजी! दादाजी!" छोटा लड़का रोते हुए चिल्लाया. "आप यह क्या कर रहे हैं? रुक जाइए, दादाजी! कृपया रुक जाइए!"



गांव वालों ने पहाड़ी के नीचे से अपने बेशकीमती धान के खेतों को जलते हुए देखा. फिर पूरा-का-पूरा गांव पहाड़ी की ओर दौड़ पड़ा. महिलायें, पुरुष और बच्चे सभी आग बुझाने के लिए पहाड़ पर चढ़े. गांव का एक भी व्यक्ति पीछे नहीं छूटा.



और जब वे लोग पहाड़ पर पहुंचे और उन्होंने धान की पूरी फसल को लपटों में जलते हुए देखा, तो वे फूट-फूटकर रोने लगे, "यह कैसे हुआ? यह सब कैसे हुआ?"

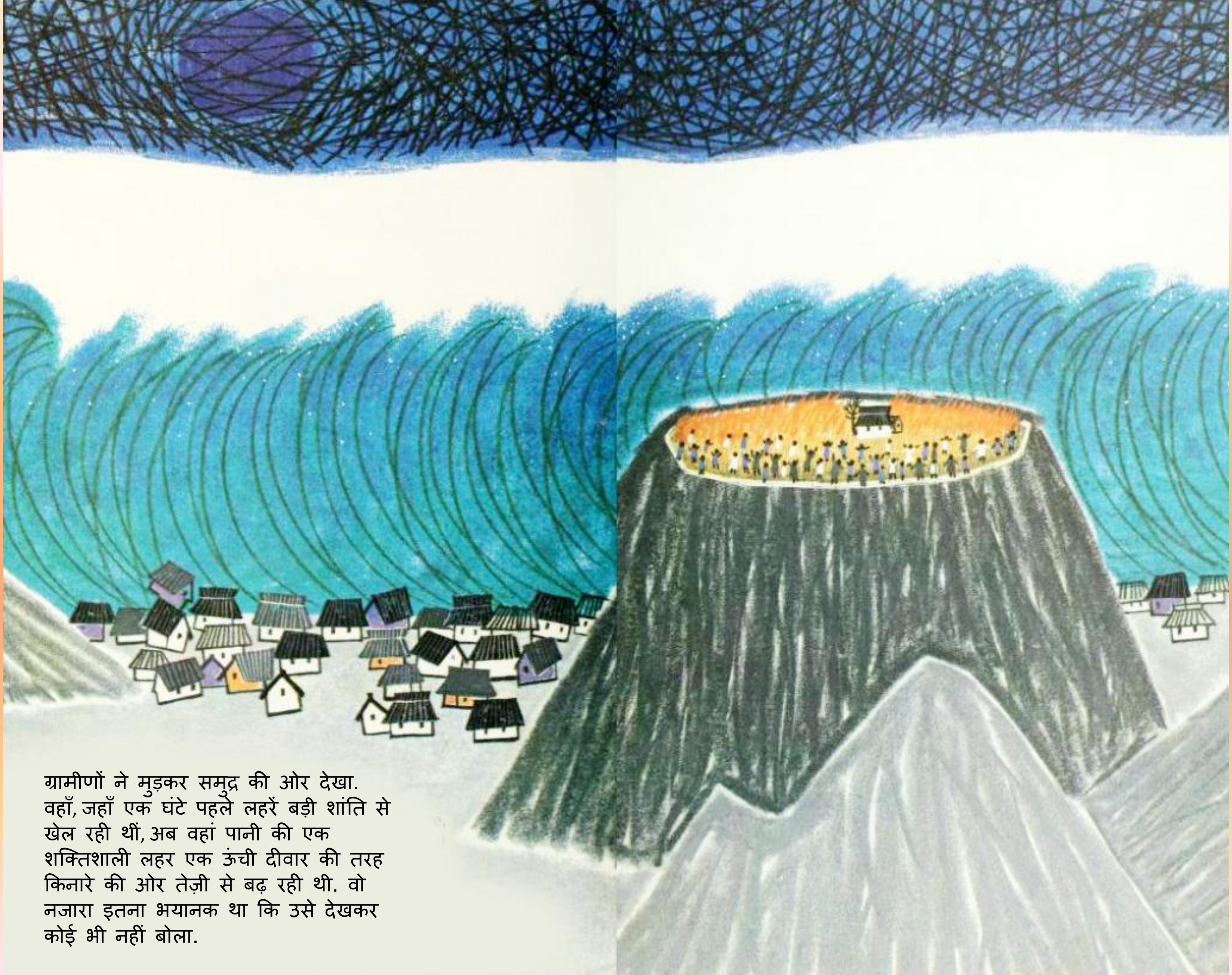
"मैंने ही धान के खेतों में आग लगाई," बूढ़े ने गंभीरता से कहा.

"हाँ," छोटे लड़के ने पुष्टि की, "दादाजी ने ही खेतों में आग लगाई है."

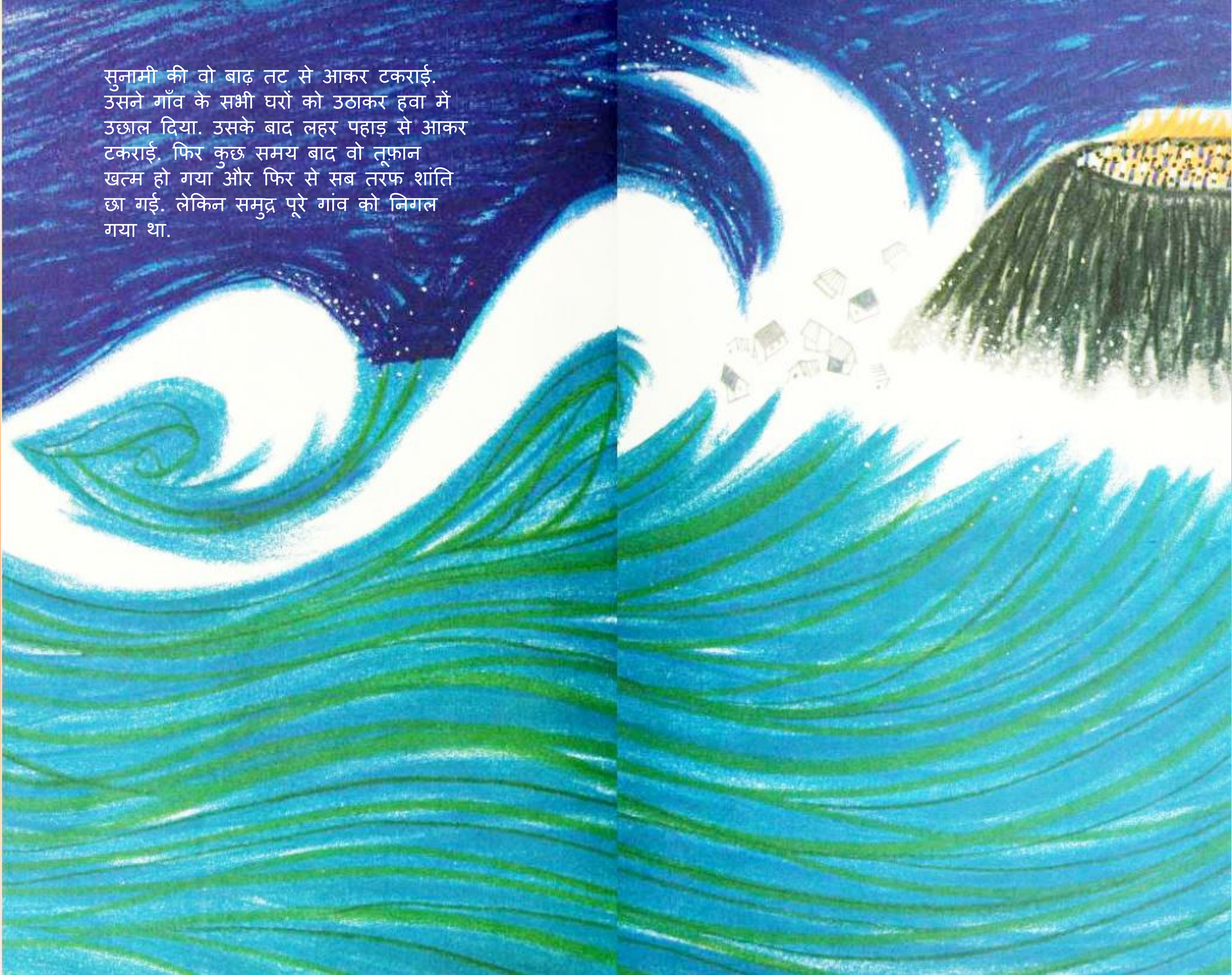
यह सुनकर गांववाले आग-बबूला हो गए. फिर बूढ़े आदमी के चारों ओर लोगों की एक भीड़ इकट्ठी हो गई जो चिल्लाई, "क्यों? बताओ तुमने ऐसा क्यों किया?"

बूढ़ा शांत रहा. "उधर देखो!" उसने समुद्र की ओर इशारा करते हुए कहा.

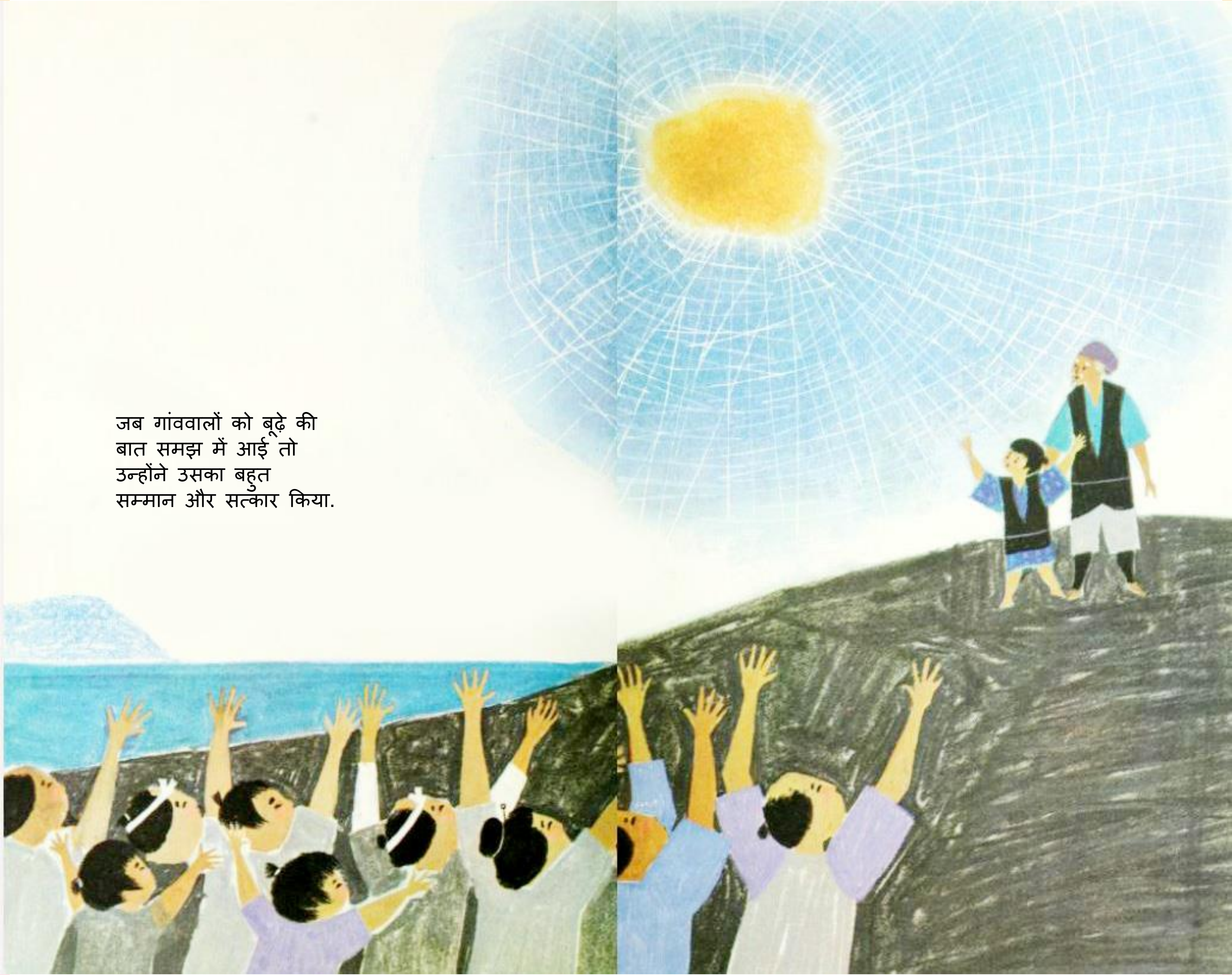




ग्रामीणों ने मुड़कर समुद्र की ओर देखा. वहाँ, जहाँ एक घंटे पहले लहरें बड़ी शांति से खेल रही थीं, अब वहां पानी की एक शक्तिशाली लहर एक ऊंची दीवार की तरह किनारे की ओर तेज़ी से बढ़ रही थी. वो नजारा इतना भयानक था कि उसे देखकर कोई भी नहीं बोला.



सुनामी की वो बाढ़ तट से आकर टकराई. उसने गाँव के सभी घरों को उठाकर हवा में उछाल दिया. उसके बाद लहर पहाड़ से आकर टकराई. फिर कुछ समय बाद वो तूफ़ान खत्म हो गया और फिर से सब तरफ शांति छा गई. लेकिन समुद्र पूरे गांव को निगल गया था.



जब गांववालों को बूढ़े की
बात समझ में आई तो
उन्होंने उसका बहुत
सम्मान और सत्कार किया.

